हमारे उद्धारकर्ता यीशु का नाम धन्य हो।

एक बार प्रभु यीशु ने एक “अंजीर का पेड़” देखा (जिस पर अंजीर लगते हैं), जो फल नहीं दे रहा था, और उसने उस पर अभिशाप दिया।

मत्ती 21:18-20
“सुबह जब वह शहर जा रहा था, उसे भूख लगी।
उसने रास्ते के किनारे एक अंजीर का पेड़ देखा और उसके पास जाकर देखा कि उस पर कुछ फल है या नहीं, लेकिन वहां केवल पत्ते थे। तब उसने उस पेड़ से कहा, ‘आज से तुम कभी भी फल न देना।’ और वह पेड़ तुरंत सुख गया।
जब शिष्यों ने यह देखा, तो वे आश्चर्यचकित हुए और बोले, ‘कैसे ऐसा हो सकता है कि पेड़ इतना जल्दी सूख गया?’”

अगर आप ध्यान से देखें, तो आपको लग सकता है कि प्रभु यीशु ने गलती की क्योंकि उस पेड़ का फल देने का समय नहीं था।

यदि आप सही मौसम में संतरे के पेड़ पर संतरे खोजते हैं, तो यह कोई आश्चर्य नहीं कि अगर आपको फल न मिले। लेकिन अगर सही मौसम में फल न मिले तो यह ज्यादा हैरानी की बात होगी। लेकिन यहाँ प्रभु यीशु ने जानबूझकर उस पेड़ को अभिशापित किया, जबकि उन्हें

पता था कि फल देने का समय नहीं था।

तो क्यों?

कारण बहुत हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण यह है कि उस अंजीर के पेड़ ने बाहर से ऐसा दिखावा किया कि उसके फल हैं, लेकिन वास्तव में उसमें कोई फल नहीं था। इसका मतलब यह था कि वह धोखे और दिखावे का प्रतीक था।

कल्पना कीजिए कि आपके सामने तीन लिफाफे रखे हैं। दो लिफाफे बिल्कुल खाली हैं, और एक ऐसा लगता है जैसे उसमें पैसा है। आप उस लिफाफे को चुनते हैं, लेकिन अंदर कुछ नहीं होता। आप निराश होंगे और उस लिफाफे को फेंक देंगे ताकि वह और किसी को धोखा न दे।

ठीक उसी तरह, मसीह जानता था कि यह अंजीर का पेड़ फल देने का समय नहीं था। लेकिन जब दूसरे पेड़ सूख गए थे, उस पेड़ के पत्ते हरे थे, जो दिखावा करते थे कि उसमें फल हैं, जबकि वास्तव में कोई फल नहीं था। उस धोखे को खत्म करने के लिए उसे काटना और अभिशापित करना जरूरी था।

आज कई ईसाई इसी धोखे में जी रहे हैं – उनके पास ईसाई होने के सभी बाहरी गुण हैं, लेकिन उनके फल नहीं हैं! बाहर से उनके पास ईसाई नाम हैं, वे उपदेश देते हैं, बड़ी-बड़ी बाइबलें रखते हैं, चर्च

में पद हैं, लेकिन अंदर से वे सच्चे ईसाई नहीं हैं, उनके फल नहीं हैं! वे उन्हीं में से हैं जिन्हें प्रभु ‘उगल’ देगा।

प्रकाशितवाक्य 3:15-17
“मैं तेरे काम जानता हूँ; तू न ठंडा है, न गरम। काश तू ठंडा होता, या गरम होता!
किन्तु क्योंकि तू उबला हुआ है, न ठंडा, न गरम, मैं तुझे अपने मुँह से उगल डालूँगा।
क्योंकि तू कहता है, मैं धनवान हूँ, मैंने समृद्धि प्राप्त की है, मुझे किसी चीज़ की जरूरत नहीं; और तू नहीं जानता कि तू दुर्बल, दीन, गरीब, अंधा और नग्न है।”

इस फिरे हुएपन से बाहर आओ, ताकि मसीह के अभिशाप से बच सको! यदि तुमने गरम होने का निर्णय लिया है, तो गरम बनो, प्रिय! यदि ठंडे होने का फैसला किया है, तो लेख कहते हैं कि ठंडा होना बेहतर है बजाय कि बीच-बीच में रहने के।

प्रभु हमें इस बात में बहुत मदद करें।

ईश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे।

इन अच्छी खबरों को दूसरों के साथ साझा करें!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp